क्रिस्चेन मुसलमान हो गया
(और दीगर 14 म-दनी बहारें)
ओफ़िसर कैसे मु-तअस्सिर हुवा ?
इज्तिमाअ़ की ता'दाद बढ़ गई
बुरे अ़क़ाइद से ताइब हो गया
खुश नसीब नौ जवानर
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए इस्लाही कुतुब
मक-तबतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, खास बाज़ार, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1. गुजरात-इन्डिया
Ph: 91-79- 2539 11 68 E-mail : maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"फ़ैज़ाने अ़त्तार" के 9 हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की "9 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा ﷺ : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(अल मो'जमुल कबीर लित्त़बरानी, अल ह़दीस:5942, जि.6, स.185)

दो म-दनी फूल :

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार हम्द व

(2) सलात और

(3) तअ़व्वुज़ व

(4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा।

(इसी स-फ़्हे के ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)

(5) हत्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और

(6) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा www.dawateislami.net

(7) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और

(8) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा

(9) दूसरों को येह रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा।

पहले इसे पढ़ लीजिये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "T.V. की तबाहकारियां" में लिखते हैं :

फ़ख़्रिया फ़िल्में डिरामे देखने वालों की ख़िदमत में इ़ब्रत के लिये एक ह़या सोज़ वाक़ेआ़ अ़र्ज़ करता हूं : मुझे मक्कए मुकर्रमा में किसी ने एक ख़ानमां बरबाद लड़की का ख़त़ पढ़ने को दिया जिस में मज़्मून कुछ इस त़रह़ था : हमारे घर में T.V. पहले ही से मौजूद था। हमारे अब्बू के हाथ में कुछ पैसे आ गए तो डिश एन्टीना भी उठा लाए। अब हम मुल्की फ़िल्मों के इ़लावा ग़ैर मुल्की फ़िल्में भी देखने लगे। मेरी स्कूल की सहेली ने मुझे एक दिन कहा : फ़ुलां चेनल लगाओगी तो सेक्स अपील (SEX APPELE) मनाज़िर के मज़े लूटने को मिलेंगे। एक बार जब मैं घर में अकेली थी तो वोह चेनल ऑन कर दिया "जिन्सिय्यात" के मुख़्तलफ़ मनाज़िर देख कर मैं जिन्सी ख़्वाहिश के सबब आपे से बाहर हो गई, बेताब हो कर फ़ौरन घर से बाहर निकली, इत्तिफ़ाक़ से एक कार क़रीब से गुज़र रही थी जिसे एक नौ जवान चला रहा था,

कार में कोई और न था, मैं ने उस से लिफ़्ट मांगी, उस ने मुझे बिठा लिया....यहां तक कि मैं ने उस के साथ "काला मुंह" कर लिया। मेरी बकारत (या'नी कंवारपन) ज़ाइल हो गई, मेरे माथे पर कलंक का टीका लग गया, मैं बरबाद हो गई ! मौलाना साहिब ! बताइये मुजरिम कौन ?" मैं ख़ुद या मेरे अब्बू कि जिन्हों ने घर में पहले T.V. ला कर बसाया और फिर डिश एन्टीना लगाया।

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

आह ! इस त़रह़ तो T.V. और V.C.R. और INTERNET पर फ़िल्में और डिरामे देखने के सबब रोज़ाना न जाने कितनी इ़ज़्ज़तें पामाल होती होंगी। न जाने कितने ही नौ जवान लड़के और लड़कियां दुन्या में ही बरबाद हो जाते होंगे।

(T.V. की तबाहकारियां, स. 24)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस इ़ब्रतनाक ह़िकायत से मुआ़शरे की बदह़ाली का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। वाक़ेई फ़ी ज़माना ह़ालात बड़ी तेज़ी के साथ तनज़्ज़ुली की त़रफ़ बढ़ते ही चले जा रहे हैं। एक त़रफ़ ***बे अ़मली*** का सैलाब अपनी तबाही मचा रहा है तो दूसरी त़रफ़ ***बद अ़क़ीदगी*** के ख़ौफ़नाक तूफ़ान की हौलनाकियां बरबादी के भयानक मनाज़िर पेश कर रही हैं। जिद्दत पसन्दी की रंगीनियां और फ़रेबकारियां मुस्लिम मुआ़शरे को टीवी, डिश एन्टीना, केबल नेटवर्क, इन्टरनेट के ज़रीए घेरे हुए हैं। तफ़रीह़ और मा'लूमाते आ़म्मा में इज़ाफ़े के नाम पर येह आलात ग़लत़ इस्ते'माल के बाइ़स बे ह़याई को जिस तेज़ी से फ़रोग़ दे रहे हैं, येह किसी पर पोशीदा नहीं।

www.dawateislami.net

T.V. पर आने वाले फ़ह़्ह़ाशी व उ़र्यानी पर मुश्तमिल प्रोग्राम्ज़ के ज़रीए मुआ़शरे के अख़्लाक़िय्यात तबाह व बरबाद होते देख कर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस बे ह़याई के सैलाब के आगे बन्द बांधने की भरपूर सअ़ी फ़रमाई। इस सिल्सिले में बाबुल इस्लाम सिन्ध सत़्ह़ पर होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने T.V. की तबाहकारियों पर ईमान अफ़रोज़ बयान फ़रमाया जो एक निजी T.V. चेनल के ज़रीए दुन्या के 100 से ज़ाइद मुमालिक में (बिग़ैर चेहरे के सिर्फ़ आवाज़ के ज़रीए) सुना गया। इस पुर तासीर बयान को सुनने के बा'द सेंकड़ों घरों से T.V. निकाल दिया गया। इलावा अज़ीं र-मज़ानुल मुबारक सिने 1426 हिजरी में जब शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ T.V. पर (बिग़ैर चेहरे के मह़ज़ आवाज़ के ज़रीए) बयक वक़्त दुन्या के तक़रीबन 144 मुमालिक में सुनाई दी तो न सिर्फ़ पाकिस्तान बल्कि दीगर मुमालिक से भी म-दनी बहरें मौसूल होना शुरूअ़ हो गईं। (तफ़्सील के लिये मक-त-बतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला "T.V. और मूवी" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबारका पर अल्लाह व रसूल

عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का ख़ास करम है। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शख़्सियत में रब عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी तासीर अ़ता फ़रमाई है कि कई गुनाहगार सिर्फ़ आप के नूरानी चेहरे और सरापा सुन्नत पैकर के दीदार की ब–र–कत से ताइब हो कर नेकियों पर गामज़न हो जाते हैं, नेकूकारों की रिक़्क़ते क़ल्बी में इज़ाफ़ा होता है। आप की सोह़बत इस्लाहे़ आ'माल का ज़रीआ़ बनती है। चूंकि इस पुर फ़ितन दौर में जब मीडिया की त़रफ़ लोगों का रुज्ह़ान बढ़ता जारहा है और गुमराह कुन अ़क़ाइद आ'माल पर मब्नी वी.सी डीज़ की भरमार है। चुनान्चे नेकी की दा'वत को आ़म करने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मक–त–बतुल मदीना ने पिछले दिनों दो वी.सी.डीज़ बनाम ***"दा'वते इस्लामी की झल्कियां" और बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ व इज्तिमाई ए'तिकाफ़"*** जारी कीं। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इन के रीलीज़ होने के चन्द ही दिनों में म–दनी बहारें मूसूल होना शुरूअ़ हो गईं जिन में से 15 बहारें पेशे ख़िदमत हैं।

शो'बए इस्लाही़ कुतुब ***मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या***

(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ***"ज़ियाए दुरूदो सलाम"*** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि ***सरकारे मदीना,*** सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ***"मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना ब रोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।"***

(फ़िरदौसुल अख़्बार, रक़्मुल ह़दीस:3148, जि.3, स.417, त़ब्आ़ दारुल कुतुबिल अ़-रबी, बैरूत)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1) क्रिस्चेन मुसल्मान हो गया

U.K. (इंग्लेन्ड) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मैं बहुत अ़रसे से एक क्रिस्चेन पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** कर रहा था कि वोह मुसल्मान हो जाए मगर मुझे काम्याबी नहीं मिल रही थी। इसी दौरान मक-त-बतुल मदीना ने V.C.D. ***बैनल अ़क़्वामी इज्तिमाअ़ व इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** जारी की। येह V.C.D. उस क्रिस्चेन को तोह़फ़तन दी गई। उस ने V.C.D. को अपने घर वालों के साथ बैठ कर देखा। वोह V.C.D. देखता गया और उर्दू न समझने के बा वुजूद मह़ज़ ***बैनल अ़क़्वामी इज्तिमाअ़ और इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** के रूह़ परवर मनाज़िर देख कर और ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीदार की ब-र-कत से उस के दिल में इस्लाम की मह़ब्बत उतरती चली गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आख़िरेकार वोह कलिमा पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए और ***दा'वते इस्लामी*** के इज्तिमाअ़ में भी शरीक होने लगे। म-दनी माह़ौल की ब-र-कत से ***सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़*** से उन का सर सब्ज़ हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर भी बने।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) ऑफ़ीसर कैसे मुतअस्सिर हुवा ....?

मर्कज़ुल औलिया लाहौर (पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं पाकिस्तान मिल्ट्री एकाउन्टस डीपार्टमेन्ट में 16वें ग्रेड ऑफ़ीसर के ओ़हदे पर काम कर रहा हूं। ***र-मज़ानुल मुबारक*** की आमद पर मैं ने अपने 20वें ग्रेड के ऑफ़ीसर को ***दा'वते इस्लामी*** के तह़त होने वाले ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** के लिये छुट्टियों की दरख़्वास्त पेश की जो इस ने मुस्तरद कर दी। मैं चूंकि शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हूं। जिन का दरे दौलत बाबुल मदीना कराची में है। लिहाज़ा मुझे बाबुल

www.dawateislami.net

मदीना की याद ने तड़पाया तो मैं ने र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी 5 दिन की छुट्टी की दरख़्वास्त पेश कर दी कि मुझे बाबुल मदीना (कराची) जाना है। हमारा ऑफ़ीसर इन्तिहाई तन्क़ीदी ज़ेहन का मालिक था। ख़ास तौर पर मज़हबी लोगों को निशाना बनाना, उन की तज़्लील करना, झिड़कना उस का वतीरा था। उस ने दरख़्वास्त देख कर तअ़ज्जुब से पूछा : "कराची में ऐसा क्या है जो तुम ईद के अय्याम घरवालों से दूर रह कर वहां गुज़ारना चाहते हो ?" मैं ने जान छुड़ाते हुए इतना कहा कि वापस आ कर बताऊंगा।

जब मैं ***बाबुल मदीना*** की बहारें लूट कर वापस पहुंचा तो मेरे साथ मक-त-बतुल मदीना से जारी होने वाली ***बैनल अ़क़्वामी इज्तिमाअ़ व इज्तिमाई ए 'तिकाफ़़*** नामी चन्द वी सी डीज़[1] भी थीं। उन में से एक V.C.D. मैंने अपने इस आफ़ीसर को भी पेश की। अगले दिन जब मैं ऑफ़िस पहुंचा तो उस ऑफ़ीसर ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और अपने सामने वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। इस इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई पर में बहुत हैरान हुवा क्यूंकि आ़म तौर पर वोह आफ़िस के लोगों को अपने सामने बिठाना पसन्द नहीं करता था। बहर ह़ाल मैं कुर्सी पर बैठ गया। आज इस का लेहजे इन्तिहाई नर्म और बिरादराना था। उस ने तक़रीबन 25 मिनट तक मुझ से ***दा'वते इस्लामी*** के बारे में सुवालात किये जिन के मैं ने अपनी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ जवाबात दिये और उसे ***दा'वते इस्लामी*** और ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़ज़ीम दीनी ख़िदमात के बारे में बताया। उस ने कहा : ***"मैं ने वोह V.C.D. देखी है, मैं बहुत मुतअस्सिर हुवा हूं कि इतने मुख़्तसर से अ़रसे में इस क़-दर तरक़्क़ी, येह कोई मा'मूली बात नहीं, दा'वते इस्लामी वाले वाक़ेई बहुत अ़ज़ीम काम कर रहे हैं।"*** फिर उस ने उसी वक़्त दा'वते इस्लामी के ***बैनल अ़क़्वामी इज्तिमाअ़*** में जाने के लिये मेरी छुट्टियां भी मन्ज़ूर कर लीं और आफ़िस की ***मस्जिद*** की ख़िदमात भी ***अहले सुन्नत*** को सोंप दीं।

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम दोनों जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***मेरी झोली भर दे***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) सर पर इ़मामे का ताज सजा लिया

साऊथ कोरिया (South Korea) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ से बयान है कि पहले पहल मैं मा'लूमात न होने की वजह से बद अ़क़ीदा लोगों की एक जमाअ़त से काफ़ी मुतअस्सिर था और ग़लत़ फ़हमी के बाइ़स उन्हें दीने इस्लाम के ह़क़ीक़ी ख़ुद्दाम तसव्वुर करता था। मेरी ***दुरुस्त रहनुमाई*** की तरकीब इस त़रह़ बनी कि 27 वीं शबे र-मज़ान सिने 1428 हिजरी को ***फ़ैज़ाने मदीना*** (कोरिया) में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के दौरान ***बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ व इज्तिमाई ए 'तिकाफ़़*** नामी V.C.D. दिखाई गई। जिस में मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ में होने वाले दा'वते इस्लामी के ***बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** और दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में होने वाले ***इज्तिमाई ए 'तिकाफ़़*** की झल्कियां पेश की गई थीं। इस V.C.D. में दिखाए जाने वाले मनाज़िर देख कर मैं दंग रह गया

कि ***दा'वते इस्लामी*** ही वोह तह़रीक है जो आ़लमगीर पैमाने पर ***तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत*** की अ़ज़ीम ख़िदमत सर अन्जाम दे रही है। और ह़ज के ***बा'द मुसल्मानों का सब से बड़ा इज्तिमाअ़ मदीनतुल औलिया मुल्तान*** में होता है। मैं ***दा'वते इस्लामी*** की मिसाली कारकर्दगी से बेह़द मुतअस्सिर हुवा, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बद अ़क़ीदा लोगों की मह़ब्बत दिल से निकल गई और मैं ने ***सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे का ताज अपने सर पर सजा लिया।***

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) गुनाहों से तौबा कर ली

मर्कज़ुल औलिया (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ के बा'द हाथों हाथ 12 दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल हुई। हमारा म-दनी क़ाफ़िला मर्कज़ुल औलिया के अ़लाक़े लियाक़तआबाद कोट लखपत की जामेअ़ मस्जिद ग़ौसिया में ह़ाज़िर हुवा। वहां मेरी एक नौ जवान इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई जिस ने कुछ यूं बयान किया : ***"बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़*** से पहले मैं ने अपने अ़लाक़े में होने वाले ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** में शिर्कत की। ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ए र-मज़ान सुन कर मैं बहुत मुतअस्सिर हुवा और ***बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़*** के मनाज़िर देख कर इज्तिमाअ़ में शिर्कत का भी ज़ेहन बना। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा। वहां पर ***ख़ौफ़े ख़ुदा*** और ***इ़श्के़ मुस्त़फ़ा*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मा'मूर बयानात सुन कर मुझे ***गुनाहों से तौबा*** की तौफ़ीक़ मिली और मैं ने ***नमाज़ों की पाबन्दी*** की निय्यत भी की। जब मैं इज्तिमाअ़ में शिर्कत के बा'द घर पहुंचा तो नमाज़े फ़ज्र में उठने के लिये इलार्म लगाया तो मेरी अहलिया केहने लगी कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं भी आप के साथ बेदार हो कर नमाज़े फ़ज्र अदा करूंगी। मैं ने अपने चेहरे पर मीठी मीठी सुन्नत ***दाढ़ी शरीफ़*** भी सजा ली। मैं अपनी चिकन शॉप पर ख़रीदारी के लिये आने वाले इस्लामी भाइयों पर भी ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करता हूं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से 2 इस्लामी भाई ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की सआ़दत पा चुके हैं। मेरी ख़ुश नसीबी की मे'राज देखिये कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली, ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के हाथों मुरीद हो कर ***अ़त्त़ारी*** भी बन चुका हूं। कुछ अ़रसे बा'द मेरे कज़िन की शादी है। मेरी ख़्वाहिश है कि उस की शादी के मौक़अ़ पर ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** की तरकीब बनाऊं।"

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(5) ज़ारो क़ितार रोने लगे

हिन्द (म-दनी) काबीना के निगरान का बयान कुछ यूं है कि ***''बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ व इज्तिमाई ए'तिकाफ़''*** नामी **V.C.D** को पाकिस्तान के साथ साथ हिन्द में भी रीलीज़ किया गया और हाथों हाथ ***V.C.D इज्तिमाअ़ात*** किये गए जिन में कसीर ता'दाद में ***इस्लामी भाई*** शरीक हुए। जब ***V.C.D*** में ***अल वदाए़ र-मज़ान*** के रिक़्क़त आमेज़ मनाज़िर दिखाए गए तो इज्तिमाअ़ में शरीक अक्सर इस्लामी भाई अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख सके और ***ज़ारो क़ितार रनो लगे।*** हम ने महसूस किया कि इन इज्तिमाअ़ात के बा'द इस्लामी भाइयों की दा'वते इस्लामी से ***महब्बत में इज़ाफ़ा*** हो गया है जिस से ***म-दनी कामों*** को मदीने के 12 चांद लग गए हैं।

नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत में रोने का अन्दाज़
तुम आ जाओ सिखलाएगा म-दनी माहौल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) नमाज़ी बन गए

हॉंगकोंग के ज़िम्मादार इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि जब ***V.C.D ''बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ व इज्तिमाई ए'तिकाफ़''*** बाबुल मदीना कराची से रीलीज़ की गई तो हॉंगकोंग के हफ़्तावार ***सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** में भी इस का ए'लान किया गया चुनान्चे तक़रीबन 30 घरानों ने येह **V.C.D** इन्टरनेट के ज़रीए ***दा'वते इस्लामी*** की वेब साइट पर देखी और ***दा'वते इस्लामी*** की मदनी कारकर्दगी से बहुत मुतअस्सिर हुए। इस **V.C.D** को देखने के बा'द ***12 इस्लामी भाइयों*** ने ***नमाज़*** पढ़ना शुरूअ़ कर दी और ***दा'वते इस्लामी*** के हफ़्तावार ***सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** में भी पाबन्दी से शरीक होने लगे। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कई इस्लामी भाई म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर भी बने।

www.dawateislami.net

नमाज़ें जो पढ़ते नहीं उन को ला रैब
नमाज़ी है देता बना म-दनी माहौल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) शुरकाए इज्तिमाअ़ की ता'दाद बढ़ गई

बाबुल मदीना कराची के डिवीज़न निगाहे मुर्शिद के इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि ***दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** (सिने 1428 हिजरी) की तारीख़ जैसे जैसे क़रीब आ रही थी मेरी तश्वीश में इज़ाफ़ा होता जा रहा था। मुल्की हालात के पेशे नज़र मुझे ख़दशा था कि शायद हमारे डिवीज़न से इस मरतबा बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में शुरका की ता'दाद काफ़ी कम होगी। ऐसे में येह ख़ुश ख़बरी मिली कि ***मक-त-बतुल मदीना ने दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** की ***V.C.D.*** रीलीज़ कर दी है। हम ने हाथों हाथ ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** की तरकीब बनाई। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** की ब-र-कत से हमारे डिवीज़न से कमो बेश ***500*** से ज़ाइद इस्लामी भाई ***बैनल अक़्वामी***

इज्तिमाअ़ में शरीक हुए।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) बुरे अ़क़ाइद से ताइब हो गया

सूबा पंजाब (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है कि बद अ़क़ीदा लोगों में उठने बैठने की वजह से मैं अ़क़ाइदे अहले सुन्नत के बारे में शुकूक व शुबहात का शिकार हो चुका था। शुकूक व शुबहात के बादल इस त़रह़ छटे कि र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे की आमद आमद थी। ऐसे में सब्ज़ सब्ज़ इ़मामों का ताज सजाने वाले कुछ ***इस्लामी भाइयों*** ने मुझ पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** की और मुझे ***दा'वते इस्लामी*** के ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** में शिर्कत की दा'वत पेश की। उन के ख़ुलूस को देखते हुए मैं ने ह़ामी भर ली और ए'तिकाफ़ में बैठने के लिये गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा) ह़ाज़िर हो गया। दौराने ए'तिकाफ़ मैं कज बह़सी के ज़रीए़ मो'तकिफ़ीन को परेशान करता रहा। र-मज़ानुल मुबारक जब एक दो दिन का मेहमान रह गया इस्लामी भाइयों ने मुझे ह़ज़रते अ़ल्लामा ***मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की अल वदाए़ र-मज़ान और बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ वाली ***V.C.D.*** दिखाई। जब मैं ने ***अल वदाए़ र-मज़ान*** के रिक़्क़त अंगेज़ मनाज़िर देखे तो मेरे दिल की दुन्या बदल गई और मैं ने सच्चे दिल से तमाम गुनाहों और बुरे अ़क़ाइद से ***तौबा*** की और ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दामन से वाबस्ता हो कर ***अ़त्तारी*** भी बन गया।

www.dawateislami.net

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर
जिसे ख़ैर से मिल गया म-दनी माह़ौल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) म-दनी क़ाफ़िला कोर्स के लिये तैयार हो गए

डेरा इस्माईल ख़ान (सरह़द) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है : मद्र-सतुल मदीना मिड़याली में ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** के दौरान ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** किया गया। ***बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़*** और ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** के ईमान अफ़रोज़ मनाज़िर देख कर शुरका बहुत मुतअस्सिर हुए। ***अल वदाए़ र-मज़ान*** के रिक़्क़त आमेज़ मनाज़िर देख कर तो रोने लगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर कई इस्लामी भाइयों ने अपने सर पर ***इ़मामा*** सजा लिया, ***दाढ़ी शरीफ़*** चेहरों पर सजाने की निय्यतें भी कीं। कई इस्लामी भाई ***म-दनी क़ाफ़िला कोर्स*** के लिये तैयार हो गए। बा'ज़ इस्लामी भाइयों पर तो ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि उन्हों ने वोह रात इ़बादत में गुज़ारी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कसीर इस्लामी भाइयों ने ईद के दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र इख़्तिया किया।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) खुश नसीब नौ जवान

सूबा पंजाब (पाकिस्तान) के शहर शैख़ूपूरा के इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि हमारे शहर में ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** की तरकीब बनाई गई जिस में कसीर इस्लामी भाई शरीक हुए । इन शुरका में दो ऐसे नौ जवान भी मौजूद थे जो कि फ़ैशन के दिलदादह और इन्तिहाई मॉडर्न थे । ***V.C.D.*** देख कर उन के दिल में ***म-दनी इन्क़िलाब*** बरपा हो गया । चुनान्चे उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और ***दा'वते इस्लामी*** के हफ़्तावार ***सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** में पाबन्दी से शरीक होने लगे । कुछ ही अ़रसे में उन के चेहरों पर सुन्नत के मुताबिक़ ***दाढ़ी शरीफ़*** दिखाई देने लगी और सर पर ***सब्ज़ इमामा*** शरीफ़ का ताज भी सज गया । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज वोह दोनों इस्लामी भाई आ़शिक़ाने रसूल के हमराह ***नेकी की दा'वत*** की धूमें मचाने में मस्रूफ़ हैं ।

इसी माहौल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
अंधेरा ही अंधेरा था उजाला कर दिया देखो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(11) आंखों से आंसू जारी हो गए

मर्कज़ुल औलिया लाहौर (पाकिस्तान) के एक अ़लाक़े जुलूमोड़ (मुग़ल पूरा) में होने वाले ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** में जब ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** किया गया तो उस में दिखाए गए ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** के पुर बहार मनाज़िर और ***अल वदाए़ र-मज़ान*** का पुरसोज़ अन्दाज़ देख कर इस्लामी भाइयों की आंखों से आंसू जारी हो गए । जब ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** ख़त्म हुवा तो कई इस्लामी भाइयों ने हाथों हाथ ***सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़*** से अपने सर सब्ज़ कर लिये और दाढ़ी रखने की भी निय्यत की ।

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम सारे जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी झोली भर दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(12) इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए

एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि मैं त़वील अ़रसे से एक शख़्सिय्यत पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** कर रहा था मगर वोह ग़लत़ फ़हमियों के बाइ़स मुझ से त़रह़ त़रह़ के सुवालात करते जिन के जवाबात देने की मैं अपनी सी कोशिश करता मगर वोह मुत़्मइन न होते । इतने में मक-त-बतुल मदीना ने ***बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ व इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** की ***V.C.D.*** जारी की । मैं ने वोह ***V.C.D.*** उस शख़्सिय्यत को देखने के लिये दी । मैं इस बात पर हैरान हूं कि त़वील अ़रसा कोशिश के बा वुजूद मैं जिन्हें मुत़्मइन न कर सका वोह इस को देख कर इतना मुतअस्सिर हुए कि न सिर्फ़ ***इज्तिमाअ़*** में शरीक हुए बल्कि ***सब्ज़ सब्ज़ इमामे*** का ताज भी अपने सर पर सजा लिया ।

तुम दा'वते इस्लामी को जानते हो क्या है
फ़ैज़ाने मदीना है फ़ैज़ाने मदीना है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(13) सीट केन्सल करवा दी

सूबा पंजाब (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि हमारे अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई की बैरूने मुल्क जाने की सीट बुक हो चुकी थी। इस दौरान उन्हों ने अ़लाक़े में होने वाले ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** में शिर्कत की। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस ***V.C.D.*** को देख कर उन्हें ***बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे में इज्तिमाअ़*** में शिर्कत का ऐसा जज़्बा मिला कि उन्हों ने अपनी सीट केन्सल करवा दी और ***बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़*** में जाने के लिये अपना किराया हाथों हाथ ज़िम्मादारान को जम्अ़ करवा दिया और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ में शरीक भी हुए।

बुरी सोह़बतों से कनाराकशी कर और अच्छों के पास आ के पा म-दनी माह़ौल
तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा म-दनी माह़ौल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(14) म-दनी माह़ौल से वाबस्ता हो गया

सूबा पंजाब (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मैं मुआ़शरे का बिगड़ा हुवा नौ जवान था और दिन ब दिन गुनाहों की दलदल में धंसता ही चला जा रहा था। मेरी इस्लाह़ की सूरत इस तरह़ बनी कि हमारे अ़लाक़े में ***दा'वते इस्लामी*** के ज़िम्मादारान ने ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** की तरकीब बनाई। मैं भी उस ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** में शरीक हुवा। जब मैं ने ***दा'वते इस्लामी*** के बैनल अक़्वामी ***सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** के रूह़ परवर मनाज़िर देखे तो बहुत मुतअस्सिर हुवा और जब 27 वीं शबे र-मज़ान को होने वाले ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिक़्क़त अंगेज़ बयान का कुछ ह़िस्सा सुना तो मुझे अपने साबिका अन्दाज़े ज़िन्दगी से वह़शत मह़सूस होने लगी, जूं जूं बयान सुनता गया मेरे दिल की दुन्या बदलती चली गई। बिल आख़िर मैं ने अपने तमाम ***गुनाहों से तौबा*** की और ***दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल*** से वाबस्ता हो गया। इस वक़्त मैं अपने ह़ल्क़े में ***ज़ैली मुशावरत*** के निगरान की ह़ैसिय्यत से ***नेकी की दा'वत*** की धूमें मचाने की कोशिश में मस्रूफ़ हूं।

अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ौल
है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ौल
सलामत रहे या ख़ुदा म-दनी माह़ौल
बचे नज़रे बद से सदा म-दनी माह़ौल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ
तुम अपनाए रखो सदा म-दनी माह़ौल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(15) मस्जिद बनाने की निय्यत कर ली

मर्कज़ुल औलिया लाहौर (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि अ़लाक़े सब्ज़ाज़ार में एक मैदान में ***V.C.D. इज्तिमाअ़*** मुन्अ़क़िद किया गया। ***अल वदाए़ र-मज़ान*** के पुरसोज़ मनाज़िर देख कर शुरकाए इज्तिमाअ़ रोन लगे। जब इज्तिमाअ़ इख़्तिताम को पहुंचा तो اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अहले मह़ल्ला इतने मुतअस्सिर हो चुके थे कि उन्हों ने इस मैदान के क़रीब ***मस्जिद बनाने का ए'लान कर दिया।***

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईमान की हि़फ़ाज़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम मुसल्मान हैं और एक मुसल्मान के लिये उस की सब से क़ीमती मताअ़ उस का ईमान है। इस की हि़फ़ाज़त की फ़िक्र हमें दुन्यावी अश्या से कहीं ज़ियादा होनी चाहिये। इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ***आ'ला ह़ज़रत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है : उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं जिस को (ज़िन्दगी में) सल्बे ईमान का ख़ौफ़ नहीं होता, नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़त़रा है।

(अल मल्फ़ूज़, हिस्सा:4, स.390, हामिद एन्ड कम्पनी मर्कज़ुल औलिया लाहौर)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत के इ़लावा ईमान की हि़फ़ाज़त का एक ज़रीआ़ किसी ***"मुर्शिदे कामिल"*** से बैअ़त हो जाना भी है।

बैअ़त का सुबूत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है।

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हम हर जमाअ़त को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे।

(पा.15, बनी इस्राईल:71)

तफ़्सीरे ***नूरुल इ़रफ़ान*** में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی इस आयते मुबा-रका के तह़्त लिखते हैं "इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या में किसी सालेह़ को अपना इमाम बना लेना चाहिये ***शरीअ़त*** में ***"तक़्लीद"*** कर के, और ***त़रीक़त*** में ***"बैअ़त"*** कर के, ताकि ह़श्र अच्छों के साथ हो। अगर सालेह़ इमाम न होगा तो उस का इमाम शैत़ान होगा। इस आयत में ***तक़्लीद, बैअ़त*** और मुरीदी सब का सुबूत है।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये कि किसी को अपना पीर बनाने के लिये चार शराइत़ का लिहाज़ इन्तिहाई ज़रूरी है। चुनान्चे इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 स-फ़ह़ा:603 पर पीर की शराइत़ कुछ यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

(1) सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी हो।

(2) इतना इ़ल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरियात के मसाइल किताबों से निकाल सके।

(3) फ़ासिक़े मो'लिन न हो (एक बार गुनाहे कबीरा करने वाला या गुनाहे सग़ीरा पर इस्रार करने वाला या'नी तीन या उस से ज़ियादा बार करने वाला या सग़ीरा को सग़ीरा समझ कर एक बार करने वाला फ़ासिक़ होता है और अगर अ़लल ए'लान करे तो फ़ासिक़े मो'लिन है।)

(4) उस का सिल्सि-लए बैअ़त नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल (या'नी मिला हुवा) हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के पुर फ़ितन दौर में पीरी मुरीदी का सिल्सिला वसीअ़ तर ज़रूर है, मगर जामेए़ शराइत़ पीर अगर नायाब नहीं तो कमयाब ज़रूर हैं। लेकिन येह ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम है कि वोह हर दौर में अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की इस्लाह़ के लिये अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى को पैदा फ़रमाता है। जो अपनी मोमिनाना ह़िक्मत व फ़िरासत के ज़रीए़ लोगों में ***अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश*** का मुक़द्दस जज़्बा बेदार करने की सअ़ी फ़रमाते हैं। जिस की एक मिसाल कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** का म-दनी माह़ौल हमारे सामने है। जिस के अमीर, बानिये दा'वते इस्लामी, ***अमीरे अहले सुन्नत*** अबू बिलाल ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हैं, आप की सअ़ी पैहम ने लाखों मुसल्मानों बिल्ख़ुसूस नौ जवानों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया।

www.dawateislami.net

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कुत़्बे मदीना ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन म-दनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुरीद और मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रत मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ा हैं। (आप को शारेह़े बुख़ारी, फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द ***मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़*** अम्जदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सलासिले अर-बआ़ क़ादिरिय्या चिश्तिय्या, नक़्शबन्दिय्या और सोहरवर्दिय्या की ख़िलाफ़त व कुतुब व अह़ादीस वग़ैरा की इजाज़त भी अ़त़ा फ़रमाई, ***जा नशीने सय्यिदी कुत़्बे मदीना*** ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान साह़िब अश्रफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी अपनी ख़िलाफ़त और ह़ासिल शुदा असानीद व इजाज़ात से नवाज़ा है। दुन्याए इस्लाम के और भी कई अकाबिर उ़-लमा व मशाइख़ से आप को ***ख़िलाफ़त*** ह़ासिल है।)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सिल्सि-लए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में मुरीद करते हैं और क़ादिरी सिल्सिले की अ़ज़्मत के तो क्या केहने कि इस के अ़ज़ीम पेश्वा हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़ियामत तक के लिये (ब फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ) अपने मुरीदों के तौबा पर मरने के ज़ामिन हैं।

(बह्जतुल अस्रार, स.191, मत़्बूआ़, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

म-दनी मश्वरा : जो किसी का मुरीद न हो उस की ख़िदमत में म-दनी मश्वरा है कि इस ज़माने के सिल्सि-लए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वुजूदे मस्ऊ़द को ग़नीमत जानते हुए बिला ताख़ीर इन का मुरीद हो जाए। यक़ीनन मुरीद होने में नुक़्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा ही फ़ाइदा है।

शैत़ानी रुकावट : मगर येह बात ज़ेहन में रहे कि चूंकि अमीरे ***अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए ***हुज़ूरे ग़ौसे पाक*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुरीद बनने में ईमान के तह़फ़्फ़ुज़, मरने से पहले तौबा की तौफ़ीक़, जहन्नम से आज़ादी और जन्नत में दाख़िले जैसे अ़ज़ीम मनाफ़ेअ़ मु-तवक़्क़ेअ़ हैं। लिहाज़ा शैत़ान आप को मुरीद बनने से रोकने की भरपूर कोशिश करेगा। ***आप*** के दिल में ख़याल आएगा, मैं ज़रा मां बाप से पूछ लूं, दोस्तों का भी मश्वरा ले लूं, ज़रा नमाज़ का पाबन्द बन जाऊं, अभी जल्दी क्या है, ज़रा मुरीद बनने के क़ाबिल तो हो जाऊं, फिर मुरीद भी बन जाऊंगा। मेरे प्यारे इस्लामी भाई ! कहीं क़ाबिल बनने के इन्तिज़ार में मौत न आ संभाले, ***लिहाज़ा मुरीद बनने में ताख़ीर नहीं करनी चाहिये।***

श-ज-रए अ़त्तारिय्या : اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक बहुत ही प्यारा ***''श-जरह शरीफ़''*** भी मुरत्तब फ़रमाया है। जिस में गुनाहों से बचने के लिये, काम अटक जाए तो उस वक़्त, और रोज़ी में ब-र-कत के लिये क्या क्या पढ़ना चाहिये, नीज़ जादू टोने से ह़िफ़ाज़त के लिये क्या करना चाहिये, इसी त़रह़ के और भी ''अवराद'' लिखे हैं। इस श-जरे को सिर्फ़ वोही पढ़ सकते हैं, जो ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी सिल्सिले में मुरीद या त़ालिब होते हैं। इन के इ़लावा किसी और को पढ़ने की इजाज़त नहीं। लिहाज़ा अपने घर के एक एक फ़र्द बल्कि अगर एक दिन का बच्चा भी हो तो उसे भी ***सरकारे ग़ौसे आ'ज़म*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सिल्सिले में मुरीद करवा कर ***क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी*** बना दें। ***बल्कि*** उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के पेशे नज़र, जहां आप ख़ुद ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद होना पसन्द फ़रमाएं वहां इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए अपने अ़ज़ीज़ो अक़रबा और अहले ख़ाना, दोस्त अह़बाब व दीगर मुसल्मानों को भी तरग़ीब दिला कर मुरीद करवा दें।

www.dawateislami.net

मुरीद बनने का त़रीक़ा

बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें, इस बात का इज़हार करते हैं कि हम ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद या तालिब होना चाहते हैं मगर तरीक़ेकार मा'लूम नहीं। तो अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को ***मुरीद या त़ालिब*** बनवाना चाहते हैं उन का नाम, एक स-फ़ह़े पर तरतीब वार बमअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या ***म-दनी मर्कज़, शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के पास, शाहे आ़लम अह़मदआबाद*** के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सि-लए ***क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या*** में दाख़िल कर लिया जाएगा। इस के लिये नाम लिखने का त़रीक़ा भी समझ लें।

म-सलन लड़की हो तो ***मैमूना बिन्ते अ़ली अक्बर*** उ़म्र तक़रीबन तीन माह और लड़का हो तो ***मुह़म्मद अमीन बिन मुह़म्मद अक्रम*** उ़म्र तक़रीबन सात साल, अपना

मुकम्मल पता लिखना हरगिज़ न भूलें (पता इंग्रेज़ी के केपिटल हुरूफ़ में लिखें)

E.Mail: Attar@dawateislami.net

''क़ादिरी अ़त्तारी'' या ''क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या'' बनवाने के लिये

(1) नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ लिखें, ग़ैर मश्हूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं. अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफी हो तो दूसरा पता लिखने की हाजत नहीं. (2) एड्रेस में महरम या सरपरस्त का नाम ज़रूर लिखें. (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफाफे साथ ज़रूर इरसाल फरमाएं.

नंबर शुमार	नाम	मर्द/औरत	बिन/बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फोर्म को महफूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपिया करवा लें.

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

(शो'बए इस्लाही कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)

(1) करन्सी नोट के शर-ई अह़कामात : (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी अह़कामे क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल स़-फ़ह़ात:199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तस़व्वुरे शैख़) (अल याक़ू-ततूल वासित़ह) (कुल स़-फ़ह़ात:60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल स़-फ़ह़ात:74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तश्रीह तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस़्लाह़) (कुल स-फहात:41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त : (मक़ालुल उ़-रफ़ा बि ए'ज़ाज़े शर-ए व उ़-लमाअ) (कुल स़-फ़ह़ात:57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़ (तुरुक़े इस़्बाते हिलाल) (कुल स़-फ़ह़ात:63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब : (इज़्हारुल ह़क़्क़िल जली) (कुलस़-फ़ह़ात:100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (विशाहुल जीद फ़ी तहलीलि मुआ़-न-क़तिल ईद) (कुल स़-फ़ह़ात:55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल : (रद्दुल क़ह़ूति वल वबाअ बिदा'वतिल जीरानि वमुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल स़-फ़ह़ात:40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ : (अल हुक़ूक़ लि तरहिल उ़क़ूक़) (कुल स़-फ़ह़ात:125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल : (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिदुआ़ मअ़हू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनुल विआ़अ) (कुल स़-फ़ह़ात:140)

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब :

अज़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल स-फ़ह़ात:74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल स-फ़ह़ात:77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल स-फ़ह़ात:62)

(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल स-फ़ह़ात:60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल स-फ़ह़ात:46)

(17) अजलल एअ़लाम (कुल स-फ़ह़ात:70)

(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्या (कुल स-फ़ह़ात:93)

(19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़्तार (अल मुजल्लिद अल अव्वल वस्सानी वस्सालिस) (कुल स-फ़ह़ात:570,672)

शो'बए इस़्लाह़ी कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ : (कुल स़-फ़ह़ात:160)

www.dawateislami.net

(23) इन्फ़िरादी कोशिश : (कुल स़-फ़ह़ात:220)

(24) तंगदस्ती के अस्बाब (कुल स-फ़ह़ात:33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल स-फ़ह़ात:164)

(26) इम्तिह़ान की तैयारी कैसे करें ? (कुल स-फ़ह़ात:32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल स-फ़ह़ात:39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल स-फ़ह़ात:152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल स-फ़ह़ात:43)

(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल स-फ़ह़ात:196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल स-फ़ह़ात:63)

(32) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल स-फ़ह़ात:325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल स-फ़ह़ात:96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल स-फ़ह़ात:50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल स-फ़ह़ात:142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्या (कुल स-फ़ह़ात:112)

(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल स-फ़ह़ात:24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल स-फ़ह़ात:30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल स-फ़ह़ात:124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल स-फ़ह़ात:48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल स-फ़ह़ात:275)

(42) टीवी और मूवी (कुल स-फ़ह़ात:32)

(43) ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल स-फ़ह़ात:24)

(51) ग़ौसे पाक رضی اللہ تعالی عنہ के ह़ालात (कुल स-फ़ह़ात:106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल स-फ़ह़ात:100)

(53) रहनुमाए जद्वल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल स-फ़ह़ात:255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेल ख़ाना जात में ख़िदमात (कुल स-फ़ह़ात:24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल स-फ़ह़ात:68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल स-फ़ह़ात:220)

(57) तरबिय्यते औलाद (कुल स-फ़ह़ात:187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल स-फ़ह़ात:62)

(59) अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल स-फ़ह़ात:66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल स-फ़ह़ात:120)

(61) बद गुमानी (कुल स-फ़ह़ात:57)

www.dawateislami.net

(62) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (63) बद नसीब दूल्हा (कुल स-फ़ह़ात:32)

(64) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल स-फ़ह़ात:55)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

(65) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुतजर्रुराबेह़ फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल स-फ़ह़ात:743)

(66) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल स-फ़ह़ात:36)

(67) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल स-फ़ह़ात:74)

(68) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़त्तअ़ल्लुम) (कुल स-फ़ह़ात:102)

(69) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद) (कुल स-फ़ह़ात:64)

(70) अद्दअ़ूवत इलल फ़िक्र (कुल स-फ़ह़ात:148)

(71) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल स-फ़ह़ात:300)

(72) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (कुल स-फ़ह़ात:847)

(73) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुल स-फ़ह़ात:133)

(74) म-दनी आक़ा ﷺ के रौशन फ़ैसले (कुल स-फ़ह़ा:103)

शो'बए दर्सी कुतुब

(75) ता'रीफ़ाते नह़विय्या (कुल स-फ़ह़ात:45)

(76) किताबुल अ़क़ाइद (कुल स-फ़ह़ात:64)

(77) नुज़्हतुन्नज़्र शरहे नुख़्बतुल फ़िक्र (कुल स-फ़ह़ात:175)

(78) अर-बईने न-वविय्या (कुल स-फ़ह़ात:121)

(79) निसाबुत्तज्वीद (कुल स-फ़ह़ात:79)

(80) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल स-फ़ह़ात:180)

(81) वक़ायतुन्नह्व फ़ी शरहे हिदायतुन्नह्व

(82) शरहे मायए आ़मिल (कुल स-फ़ह़ात:38)

(83) सर्फ़ बहाई मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई (कुल स-फ़ह़ात:55)

(84) अल मुह़ादसतुल अ़र-बिय्या (कुल स-फ़ह़ात:101)

(85) शरहे अर-बईने न-वविय्या फ़िल अह़ादीसुस सही-ह़तुन न-बविय्या (कुल स-फ़ह़ात:155)

शो'बए तख़्रीज

(86) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल स-फ़ह़ात:422)

(87) जन्नती ज़ेवर (कुल स-फ़ह़ात:679)

(88 ता 93) बहारे शरीअ़त (छे ह़िस्से)

(94) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल स-फ़ह़ात:170)

(95)आईनए क़ियामत (कुल स-फ़ह़ात:108)

(96) सह़ाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم का इश्के़ रसूल ﷺ (कुल स-फ़ह़ात:274)

www.dawateislami.net

(97) उम्मुहातुल मुअ्मिनीन (कुल स-फ़ह़ात:59)

(98) इ़ल्मुल क़ुरआन (कुल स-फ़ह़ात:244)

(99) अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन (कुल स-फ़ह़ात:78)

(100) अच्छे माह़ौल की ब-र-कतें (कुल स-फ़ह़ात:56)